लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

'पवन प्रवाह' के सुधी पाठकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं
-सम्पादक

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
वर्ष 04 अंक 23 लखनऊ। सोमवार 26 से 04 मार्च-2018
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

अध्यात्म और सामाजिक समागम से ही व्यापार में सुगमता सम्भवः प्रो. हिमांशु

लखनऊ(वि.)। 'व्यापारिक तालमेल बढ़ाने में सामाजिक, आध्यात्मिक तथा तकनीकी आयाम का महत्व' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में दिनांक 24 व 25 फरवरी, 2018 को प्रबुद्ध वक्ताओं ने महत्वपूर्ण सुझाव व शोध-पत्र प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के मुख्य अतिथि एस.वाई. सिद्दीकी, चीफ मेन्टर, मारूति सुजूकी ने स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइन्सेज, लखनऊ, में आयोजित राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में व्यापारिक तालमेल बढ़ाने में सामाजिक, आध्यात्मिक तथा तकनीकी आयाम के महत्व पर बोलते हुए कहा कि व्यापार, अध्यात्म तथा समाज तीनों आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए है। व्यापार जगत को अध्यात्म से जुड़ना होगा तभी किसी समाज में खुशहाली आयेगी। उन्होंने व्यापार जगत में मारूति उद्योग की सफलता पर बोलते बताया कि जापानियों की अध्यात्म के प्रति जागरूकता व व्यापार में सामन्जस्य के चलते ही मारूति उद्योग सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहा है। उन्होंने अपने अनुभव को साझा करते हुए व्यापारिक संस्थानों में 'देने की भावना' पर बल दिया।

जाने माने मैनेजमेंट गुरू, आई.आई.एम. लखनऊ के प्रोफेसर हिमांशु राय ने कांफ्रेंस में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नवीन टेक्नोलॉजी से इन्सानी जीवन में पैदा हुई क्रान्ति से हमारा जीवन पूरी तरह से बदल चुका है। इस पहल की प्रशंसा करते हुए प्रो. राय ने आगे बताया कि इसका दूरगामी प्रभाव आगे देखने को मिलेगा जो निश्चित ही सकारात्मक होगा। उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि सही व्यवसाय केवल आध्यात्म और सामाजिक संयोग से ही सम्भव है। अध्यात्मक को परिभाषित करते हुए प्रो0 राय ने कहा कि स्वयं की चेतना को जागरूक करना ही अध्यात्म है। जिस काम में लज्जा, भय और शंका न हो वही काम सही है।

ग्रुप हेड (एचआर), फजलानी ग्रुप डॉ. सी.एम. द्विवेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि एकता की भावना ही किसी मनुष्य को कामयाबी तक पहुंचा सकती है। किसी कार्य को करने के लिए एक अकेला मनुष्य उस कार्य को उतनी अच्छी तरह से नहीं कर सकता जितनी अच्छी तरह से एक समूह कार्य करता है। समूह की कार्यक्षमता उसकी नैतिकता पर भी निर्भर करती है इस बात को न भूलने पर भी जोर दिया डॉ. द्विवेदी ने। दो दिवसीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में आये सभी विद्वतजनों का धन्यवाद ज्ञापन देते हुए प्रो. भरत राज सिंह ने कहा कि इस दो दिवसीय सारगर्भित चर्चा का सकारात्मक परिणाम आगे देखने को मिलेगा। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये विद्वानों ने कुल 165 शोधपत्र प्रस्तुत किये। यह जानकारी संस्थान के कुलसचिव टी.पी. सिंह ने दी।